

SC

[A-22] Seat No: _____

No. of Printed Pages: 02

Sardar Patel University

M. A. (Final) (External) Examination

Tuesday Date: 09/04/2019 Time: 02.00 P.M. to 05.00 P.M.

SAN-508: Sanskrit P-VIII: Alamkarashastra: Dhvanyaloka (Udyota-1) Anandavardhan, Vakroktijivitam (Unmesh-1) Kuntak, Kavyalamkarasutravrutti- Vaman

**Total Marks: 100
(92)**

प्रश्न: १ नीचेनामांथी गमे ते भे कारिका सानुवाद सभजवो:

१. प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
यत् तत् प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु ॥
२. सरस्वती स्वादु तदर्थवस्तु निःष्यन्दमाना महतां कवीनाम्।
अलोकसामान्यमभिव्यनक्ति परिस्फुरन्तं प्रतिभाविशेषम् ॥
३. आलोकार्थी यथा दीपशिखायां यत्नवान् जनः।
तदुपायतया तद्वदर्थे वाच्ये तदादृतः ॥
४. मुख्यां वृत्तिं परित्यज्य गुणवृत्त्याऽर्थदर्शनम्।
यदुद्दिश्य फलं तत्र शब्दो नैव स्वलद्रतिः ॥

प्रश्न: २ ध्वनिविरोधी भतोनी परिचय आपी आनंदवर्धने करेलुं भाक्तमतनुं भंडन यर्थो
अथवा

(१८)

प्रश्न: २ समीक्षात्मक नोंध लभो

(१८)

१. ध्वनिनुं लक्षण अने प्रकारो
२. ध्वन्यालोकना द्विकर्तृत्वनी समस्या

प्रश्न: ३ नीचेनामांथी गमे ते भे कारिका सानुवाद सभजवो:

(१२)

१. शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि ॥
२. साहित्यमनयोः शोभाशालितां प्रति काप्यसौ।
अन्यूनानतिरिक्तत्वमनोहारण्यवस्थितिः ॥
३. वक्रभावः प्रकरणे प्रबन्धे वास्ति यादृशः।
उच्यते सहजाहार्यसौकुमार्यमनोहरः ॥
४. अत्रारोचकिनः केचिच्छायावैचित्र्यरञ्जके।
विदाग्धनेपथ्यविधौ भुजङ्गा एव सादराः ॥

प्रश्न: ४ कुंतकनी मार्गविभावना स्पष्ट करी सुकुमार मार्गनां लक्षणो सोदाहरण यर्थो
अथवा

(१८)

प्रश्न: ४ समीक्षात्मक नोंध लभो

(१८)

१. कुंतकनुं काव्यप्रयोजन चिंतन
२. स्वभावोक्ति अलंकार विशे कुंतकनो मत

(P.T.O.)



प्रश्न: ५ नीचेनामांथी गमे ते थार असंढर्भ समजावो

(१६)

१. काव्यं ग्राह्यम् अलङ्कारात्।
२. न कतकं पङ्कप्रसादनाय।
३. रीतिरात्मा काव्यस्य।
४. लोको विद्या प्रकीर्णञ्च काव्याङ्गानि।
५. गद्यं वृत्तगन्धि चूर्णमुत्कलिकाप्रायं च।
६. गुणविपर्ययात्मानो दोषाः।
७. पदमनेकार्थमक्षरं वा वृत्तं स्थाननियमे यमकम्।

प्रश्न: ६ नीचेनामांथी गमे ते भे प्रश्नोना उत्तर लभो

(२४)

१. वामननी दृष्टिओ काव्यनां प्रयोजनो यथो
२. वामननी गुण विचारणानी समीक्षा करो
३. "वामन समग्र अलंकार समूहने उपमा प्रपंच रुपे प्रतिपादित करे छे" यथो
४. वामनानुसार काव्यसमय समजावो

— ✕ —

②